

## पाठ – 8

# किसान, ज़मींदार और राज्य कृषि समाज और मुग़ल साम्राज्य

### लघु उत्तर

**Q1. कृषि इतिहास के लिखने के लिए आइन को एक स्रोत के रूप में उपयोग करने में क्या समस्याएं हैं? इतिहासकार इस स्थिति से कैसे निपटते हैं?**

**उत्तर :** आइन-ए-अकबरी को अबू फ़ज़ल ने लिखा था। यह वर्ष 1598 में पूरा हुआ था। यह अदालत, प्रशासन और सेना के संगठन, राजस्व के स्रोतों और अकबर के साम्राज्य के प्रांतों के भौतिक रेखाचित्र और लोगों की साहित्यिक, सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं का विस्तृत विवरण देता है। कृषि इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए आइन को उपयोग करने में समस्याएं हैं → गिनने में कई त्रुटियां पाई गई हैं, ये आम तौर पर मामूली होती हैं और मापदंड की संपूर्ण मात्रात्मक सत्यता से अलग नहीं होती हैं। → मात्रात्मक जानकारी प्रकृति में नहीं है। सभी प्रांतों से समान रूप से जानकारी एकत्र नहीं की गई थी → बंगाल और उड़ीसा के लिए जाति संरचना के बारे में विस्तृत जानकारी उपलब्ध नहीं है। → सुबों से राजकोषीय जानकारी उल्लेखनीय हैं लेकिन कुछ महत्वपूर्ण मापदंडों पर कुछ जानकारी जैसे कि उम्र और कीमतें अच्छी तरह से प्रलेखित नहीं हैं।

**Q2. सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में कृषि उत्पादन को किस हद निर्वाह कृषि के रूप में देखना संभव है? अपने जवाब के लिए कारण दें।**

**उत्तर :** जीवन निर्वाह कृषि एक प्रकार की कृषि पद्धति है जो विशेष रूप से किसानों द्वारा स्वयं और उनके परिवारों को खिलाने के लिए की जाती है। मध्यकालीन युग के दौरान भारत एक कृषि प्रधान देश था, जिसमें कृषि का अभ्यास करने वाले लोगों का प्रमुख हिस्सा था। हालाँकि कृषि प्रधान का मतलब यह नहीं था कि मध्यकालीन भारत में कृषि केवल निर्वाह के लिए थी। मुगल राज्य ने भी किसानों को ऐसी फसलों की खेती के लिए प्रोत्साहित किया जो अधिक राजस्व में लाए। कपास और गन्ना जैसी फसलें उत्कृष्टता का हिस्सा थीं। सत्रहवीं शताब्दी के दौरान दुनिया के विभिन्न हिस्सों से कई नई फसलें भारतीय उपमहाद्वीप में पहुंचीं।

**Q3. कृषि उत्पादन में महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका का वर्णन करें।**

**उत्तर :** कृषि उत्पादन में महिलाओं ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। पुरुषों ने कृषि और जुताई की, जबकि महिलाओं ने फसल की बुवाई, खरपतवार और फसल की कटाई की। केन्द्रक गांवों की वृद्धि और कृषि योग्य किसान खेती में विस्तार के साथ, जो मध्ययुगीन भारतीय कृषि की विशेषता थी, उत्पादन का आधार पूरे घर का श्रम और संसाधन बन गया था। स्वाभाविक रूप से, महिलाओं और पुरुषों के बीच एक लैंगिक अलगाव संभव नहीं था। बहरहाल, महिलाओं के जैविक कार्यों से संबंधित पूर्वाग्रह जारी रहे। उदाहरण के लिए, मासिक धर्म वाली महिलाओं को पश्चिमी भारत में हल या कुम्हार के चाक को छूने की अनुमति नहीं थी, या उन जंगलो में प्रवेश नहीं किया जाता था जहाँ बंगाल में सुपारी उगाई जाती थी।

#### Q4. विचाराधीन अवधि के दौरान मौद्रिक लेनदेन के महत्व का उदाहरणों के साथ चर्चा करें।

**उत्तर :** मुगल साम्राज्य एशिया में एक बड़ा क्षेत्रीय साम्राज्य था जो मिंग (चीन), सफ़वीद (ईरान) और ओटोमन (तुर्की) के साथ व्यापार संबंधों को बनाए रखने में कामयाब रहा। भारत से खरीदे गए माल का भुगतान करने के लिए एशिया में भारी मात्रा में चांदी के बुलियन लाया गया। यह भारत के लिए अच्छा था क्योंकि इसमें चांदी के प्राकृतिक संसाधन नहीं थे। परिणामस्वरूप, सोलहवीं और अठारहवीं शताब्दियों के बीच की अवधि भी धातु मुद्रा की उपलब्धता में उल्लेखनीय स्थिरता के रूप में चिह्नित की गई थी, विशेष रूप से भारत में चांदी के रूप में। इसने सिक्कों की टकसाल और अर्थव्यवस्था में धन के प्रसार के साथ-साथ मुगल राज्य द्वारा नकदी निकालने में कर और राजस्व निकालने की क्षमता में अभूतपूर्व विस्तार किया। इसने मजदूरों और बुनकरों को नकद में मजदूरी या अग्रिम के भुगतान में सुविधा प्रदान की।

#### Q5. उन सबूतों की जांच करें जो बताते हैं कि भू-राजस्व मुगल राजकोषीय प्रणाली के लिए महत्वपूर्ण था।

**उत्तर :** राजस्व मुगल साम्राज्य का आर्थिक मुख्य आधार था। राज्य के लिए यह महत्वपूर्ण था कि वह कृषि उत्पादन पर नियंत्रण सुनिश्चित करने के लिए एक प्रशासनिक तंत्र बनाए और तेजी से फैलते साम्राज्य से राजस्व को ठीक करे। इस उपकरण में दीवान का कार्यालय भी शामिल था जो साम्राज्य की राजकोषीय प्रणाली की देखरेख के लिए जिम्मेदार था। भू-राजस्व बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि यह साम्राज्य के लिए राजस्व का प्रमुख स्रोत था। यह बहुत महत्व का था क्योंकि इस तरह के साम्राज्य के प्रशासन को चलाने के लिए एक बड़ी राशि की आवश्यकता थी।

#### दीर्घ उत्तर

#### Q6. आपको किस हद तक लगता है कि जाति कृषि समाज में सामाजिक और आर्थिक संबंधों को प्रभावित करने का कारक थी?

**उत्तर :** कृषि समाज में सामाजिक और आर्थिक संबंधों को प्रभावित करने में जाति ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। गहरी असमानताएँ जाति के आधार पर थीं और अन्य जाति जैसे भेदों का अर्थ था कि कृषक अत्यधिक विषम समूह थे। ज़मीन पर कब्जा करने वालों में, एक बड़ी संख्या में लोग थे, जिन्होंने मेनियाल या कृषि मजदूर के रूप में काम किया। खेती योग्य भूमि की प्रचुरता के बावजूद, कुछ जाति समूहों को मासिक धर्म के काम सौंपे गए और इस तरह गरीबी को हटा दिया गया। → मुस्लिम समुदायों में हलालाखोरन (मेहतर) जैसे गाँव की सीमाओं के बाहर रखे गए थे; इसी तरह बिहार में मल्लाहजादों (नावों के बेटे) गुलामों की तुलना में थे। → सत्रहवीं शताब्दी के मारवाड़ में, राजपूतों को किसानों के रूप में उल्लिखित किया जाता है, जो जाटों के साथ एक ही स्थान साझा करते हैं, जिन्हें जाति पदानुक्रम में निम्न दर्जा दिया गया था। → वृंदावन (उत्तर प्रदेश) के आसपास भूमि पर खेती करने वाले गौरव ने सत्रहवीं शताब्दी में राजपूत का दर्जा मांगा। → पशुपालन और बागवानी की लाभप्रदता के कारण अहीरों, गुर्जरों और मालियों जैसी जातियाँ पदानुक्रम में बढ़ीं। → पूर्वी क्षेत्रों में, मध्यवर्ती देहाती और मछली पकड़ने वाली जातियों जैसे सदगोप और किवार्ता ने किसानों की स्थिति हासिल कर ली।

#### Q7. सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में वनवासियों का जीवन कैसे बदल गया?

**उत्तर :** वनवासियों को समकालीन ग्रंथों में जंगली कहा जाता था। हालांकि जंगली होने का "सभ्यता" की अनुपस्थिति से मतलब नहीं था, बल्कि इस शब्द ने उन लोगों का वर्णन किया है जिनकी आजीविका वनोपज इकट्ठा करने, शिकार करने और कृषि को स्थानांतरित करने से आई है। ये गतिविधियाँ काफी हद तक मौसम विशेष की थीं। भीलों के बीच, वसंत में वनोपज, मछली पकड़ने के लिए गर्मी, खेती के लिए मानसून के महीने, और शिकार के लिए शरद ऋतु आरक्षित थी। निम्नलिखित तरीकों से वनवासियों का जीवन बदल गया - → राज्य को सेना के लिए हाथियों की आवश्यकता थी। अतः वनवासियों से ली जाने वाली पेशकश में अक्सर हाथियों की आपूर्ति शामिल थी। → वाणिज्यिक कृषि का प्रसार एक महत्वपूर्ण बाहरी कारक था जो जंगलों में रहने वालों के जीवन पर प्रभाव डालता था। → वन उत्पाद जैसे शहद, मोम और गोंद, लाख की बहुत मांग थी। सत्रहवीं शताब्दी में गम, लाख भारत से विदेशी निर्यात की प्रमुख वस्तु बन गया। → कई आदिवासी जमींदार बन गए थे, कुछ राजा भी बन गए। यद्यपि एक आदिवासी से एक राजशाही प्रणाली में संक्रमण बहुत पहले शुरू हो गया था, लेकिन यह प्रक्रिया सोलहवीं शताब्दी तक पूरी तरह से विकसित हो गई थी।

#### **Q8. मुगल भारत में जमींदारों द्वारा निभाई गई भूमिका का परीक्षण करें।**

**उत्तर :** जमींदार देश के ऐसे लोगों के वर्ग थे जो कृषि से दूर रहते थे लेकिन कृषि उत्पादन की प्रक्रियाओं में सीधे भाग नहीं लेते थे। उन्होंने ग्रामीण समाज में एक श्रेष्ठ स्थिति का आनंद लिया। जमींदारों के पास व्यापक निजी भूमि थी। जमींदारों के निजी उपयोग के लिए इन जमीनों पर अक्सर किराए पर या नौकरों के श्रम की मदद से खेती की जाती थी। → वे राज्य की ओर से राजस्व एकत्र कर सकते थे, एक सेवा जिसके लिए उन्हें आर्थिक रूप से मुआवजा दिया गया था। → सैन्य संसाधनों पर उनका नियंत्रण था। अधिकांश जमींदारों के पास किले और तोपखाने की इकाइयाँ होने के साथ-साथ सशस्त्र दल भी थे। → उन्होंने खेती करने वालों को नकदी ऋण सहित खेती के साधन उपलब्ध कराने में मदद की। → जमींदारियों की खरीद-बिक्री ने देश में विमुद्रीकरण की प्रक्रिया को तेज किया। → जमींदारों ने अक्सर बाज़ार (हाट) स्थापित किए, जहाँ किसान अपनी उपज बेचने के लिए भी आते थे। सत्रहवीं शताब्दी में उत्तर भारत में बड़ी संख्या में कृषि संबंधी विद्रोह हुए, जमींदारों को अक्सर राज्य के खिलाफ उनके संघर्ष में किसानों का समर्थन मिला।

#### **Q9. उन तरीकों पर चर्चा करें जिनमें पंचायतों और ग्राम प्रधानों ने ग्रामीण समाज को विनियमित किया।**

**उत्तर :** ग्राम पंचायत बड़ों की एक सभा थी, जो आमतौर पर गांव के महत्वपूर्ण लोगों के पास अपनी संपत्ति पर वंशानुगत अधिकारों के साथ होती थी। मिश्रित-जाति के गांवों में, पंचायत आमतौर पर एक विषम निकाय थी। ऑलिंगार्सी में, पंचायत ने गाँव में विभिन्न जातियों और समुदायों का प्रतिनिधित्व किया, हालाँकि वहाँ के मासिक-सह-कृषि कार्यकर्ता का प्रतिनिधित्व करने की संभावना नहीं थी। पंचायतों द्वारा किए गए निर्णय सदस्यों पर बाध्यकारी थे। ग्राम पंचायत का नेतृत्व मुखिया के रूप में किया जाता था जिसे मुकद्दम या मंडल के नाम से जाना जाता था। मुखिया का मुख्य कार्य पंचायत के लेखाकार या पटवारी द्वारा सहायता प्राप्त ग्राम खातों की तैयारी की निगरानी करना था। → पंचायत का महत्वपूर्ण कार्य यह सुनिश्चित करना था कि गाँव में रहने वाले विभिन्न समुदायों के बीच जातिगत सीमाओं को बरकरार रखा जाए। → पंचायतों को जुर्माना लगाने और समुदाय से निष्कासन की तरह अधिक गंभीर रूप से सजा देने का

अधिकार था। → गाँव में प्रत्येक जाति की अपनी जाति पंचायत थी। इन पंचायतों की ग्रामीण समाज में काफी शक्ति है। → पंचायतों को अपील की अदालत माना जाता था जो यह सुनिश्चित करती थी कि राज्य अपने नैतिक दायित्वों को निभाए और न्याय की गारंटी दे। → अत्यधिक राजस्व मांगों के मामले में, पंचायतों ने अक्सर समझौता करने का सुझाव दिया।

### मानचित्र कार्य

**Q10.** दुनिया के रूपरेखा मानचित्र पर, उन क्षेत्रों को चिह्नित करें जिनके मुगल साम्राज्य के साथ आर्थिक संबंध थे, संचार के संभावित मार्गों को भी दिखाए।

**उत्तर :** मुगल साम्राज्य के साथ आर्थिक संबंध रखने वाले क्षेत्र हैं - अफगानिस्तान, ईरान, फ्रांस, ब्रिटेन, मध्य एशिया के देश। संचार के संभावित मार्ग अटलांटिक महासागर, अरब सागर, केप ऑफ गुड होप, हिंद महासागर आदि थे।

